अपन युद्धक साक्ष्य

(गजल संग्रह)

अपन युद्धक साक्ष्य

तारानन्द वियोगी

किसुन संकल्प लोक
सुपौल

ISBN 978-81-932106-1-1

प्रकाशक : किसुन संकल्प लोक
किसुन कुटीर, गुदरी बाजार,
सुपौल–852131 (बिहार)
मोबाइल : 09471062706
ई–मेल : kedarkanan3@gmail.com

प्रथम संस्करण : 1991 (चतुरंग प्रकाशन, बेगूसराय)
द्वितीय संस्करण : 2017

मूल्य : 100/–
अक्षरांकन : रघुनाथ मुखिया
रेखांकन : अनुप्रिया
आवरण सज्जा : सुभाष भट्ट
मुद्रक : यूनिटेक ग्राफिक प्वॉइंट, नवीन शाहदरा, दिल्ली–110032

APAN YUDDHAK SAKSHYA
(Collection of Maithili Ghazals)
by **TARANAND VIYOGI**
Price : Rs 100

दोसर संस्करणक भूमिका

प्रसंगवश

'अपन युद्धक साक्ष्य' 1991 मे छपल छल। थोड़बे दिन मे सबटा प्रति खपि गेल आ डेढ़-दू दशक सँ ई पोथी दुर्लभ बनल छल। एहि बीच दू-दू टा नबका पीढ़ीक आगमन मैथिली गजलक क्षेत्र मे भ' गेल, जे एहि पोथीक बस नामे टा सुनलक। कतेको मित्र कैक अवसर पर एकर खोज केलनि मुदा हमरो लग मे एकर प्रति दुष्प्राप्य छल। खुशी अछि जे दोसर संस्करणक प्रकाशन सँ समाधान भ' सकतै।

मैथिली गजलक क्षेत्र मे हमर प्रवेश एक समीक्षकक रूप मे भेल छल। 1981 मे मैथिली गजलक विवेचना करैत हमर एकटा लेख 'मिथिला मिहिर' मे प्रकाशित भेल। ओ मैथिली गजलक सम्बन्ध मे कएल गेल प्रथम आलोचकीय प्रयास छल। तहिया हम मैथिली कविता आ आलोचनाक दुनिया मे एक नवागन्तुक रही आ एहि विधा कें अभिव्यक्तिक एक नीकतर माध्यमक रूप मे देखि रहल छलहुँ। एकर प्रवक्ता रही। फेर एहन भेल जे हम अपनो गजल लिख' लगलहुँ। सुपौल हमर अबर्जात छल आ कलानन्द भट्टक गहन संगति प्राप्त छल। बाद मे हम बुझलहुँ जे गजल लिखैत हमरा अपन 'हालात' के 'बयान' लेल एक सर्वथा नव प्लेटफॉर्म भेटि गेल छल जे कोनो वरदान सँ कम नहि छल। एखनहु हम अनुभव करै छी जे किछु बात जे हम अपन गजल मे कहि सकलहुँ अछि, एहि विधाक हमरा जीवन मे एने बिना ओ अनकहल रहि जाइत।

अनभिव्यक्तिक दुराशंका तँ एक पक्ष भेलै, लेखकीय पक्ष। पाठकीय पक्ष एहि सँ सर्वथा भिन्न आ चकित करै बला अछि। अपन दू टा प्रेमी

पाठक एखन खास तौर पर हमरा मोन पड़ैत छथि, शशिरंजन शशि आ पद्मसंभव, जे एतबा बेर एहि गजल सब कें पढ़ि चुकल छला जे एकहक टा शेर हुनका मुँहजबानी याद रहनि आ एहि शेर सभक उपयोग ओ अपन गपसप, अपन पत्राचार आ लिखापढ़ी मे कएल करथि। ईहो मोन पड़ैत अछि जे सहरसा कालेजक वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ॰ मनोरंजन झा हमर एक गजलक केवल एकटा शेर के विश्लेषण करैत एकटा नमहर लेख लिखने छला जे कोनो पत्रिका मे प्रकशितो भेल छल। हेमकान्त, कल्पना, सुनील मल्लिक, अभिषेक मिश्र आ नहि जानि कतेक आन गायक एहि गजल सब कें स्वर देलनि, एखनहु कहियो काल दरभंगा रेडियो पर से सुनाइ पड़ि जाइत अछि। तखन मोन पड़ै छथि दरभंगा रेडियोक संगीत-रचनाकार जवाहर झा, जे हमर छान्दस प्रयोग सभक संगीत शास्त्रीय व्याख्या करथि आ ततेक प्रसन्न रहथि जे हम एम्हर कोनो नबका गजल लिखलहुँ की नहि, तकर जिज्ञासा राखथि। हम ओहि दिन मे अपना गामक संस्कृत कालेज मे शास्त्रीक छात्र रही आ अपन वरिष्ठ मित्र रजी अहमद तन्हा, जे महिषी मे पोस्टेड रहथि, सँ उर्दू सीखी आ हुनका मैथिली सिखाबियनि। हम गछै छी जे, जे उछाह, जे सहृदय-सम्पन्नता हमरा गजल लिखने भेटल, से हमरा लेल विरल थिक। एहि बात कें मुदा हमर पाठक शशि जी दोसर तरहें कहै छथि। ओ आइयो मानै छथि जे हम अपन जीवनक जे बेस्ट लिखि सकलहुँ से हमर गजले मे प्रकट भेल अछि आ तकरा बादक लिखल हमर साहित्य मात्र ओकर व्याख्या, ओकर विश्लेषण थिक। शशिजीक मंतव्य सँ सहमत हएब हमरा लेल कठिन अछि, खास क' क' एहि कारण सँ जे गजल लिखबाक दिन मे हम कानूनी रूप सँ बालिगो धरि नहि भेल रही। मुदा आइयो से ओ कहैत छथि आ हमरा चुप रहि जाय पड़ैत अछि।

'अपन युद्धक साक्ष्य'क प्रकाशनक खिस्सा सेहो कम रोचक नहि अछि, मुदा से विस्तार सँ कतहु अन्यत्र। ओ दिन छल जखन हमरा लोकनि 'चतुरंग' नाम सँ एकटा साहित्यिक ग्रुप बनेने रही। चतुरंगक चारि अंग--प्रदीप बिहारी, देवशंकर नवीन, केदार कानन आ हम। हमरा सभक पंचलाइन छल--'साजि चतुरंग सैन जंग जीतै लेल चलल छी।' उद्देश्य मात्र एतबे जे मैथिली साहित्यक जड़ता कें तोड़ल जाय आ हमरा सभक जे सोच आ समझ अछि तकरा प्रष्ठिापित कयल जाय। मुख्यालय बुझू जे बेगूसराय छल, जतय केदार तँ कम मुदा हमरा सभक जुटान अधिक काल होइ छल। ओही दिन मे प्रदीप एकटा प्रेस किनने छला, ट्रेडिल। ओकर नाम श्री देवराहा प्रेस। ओहि ठाम सँ 'मिथिला सौरभ' पत्रिका प्रकाशित होइ। आ, एहने मे साधनहीन हम सब बुझू जे कुटीर उद्योग बला तौर-तरीका सँ एहि किताब कें प्रकाशित केने रही। चतुरंग प्रकाशनक ओ श्रीगणेश छल। एहि किताब के विमोचन 'सगर राति दीप जरय' के बेगूसराय कथा गोष्ठी मे भेल रहै। बाद मे जे एहि किताब पर एक विशद चर्चा गोष्ठी बेगूसराय मे भेल रहय, सेहो मोन पड़ैत अछि।

'अपन युद्धक साक्ष्य' के प्रकाशनक बाद कहियो काल प्रसंगवश हम आरो गजल सब लिखलहुँ, सेहो सब एहि संस्करण मे जोड़ि देल गेल अछि। कहियो काल गीत सेहो लिखलहुँ। ओ कतहु अलग सँ संकलित होइत, तकर योजना नहि छल। कायदा सँ गीत सब एकत्रितो नहि अछि। एहना मे अइ काल मे जतबा गीत सहजता सँ उपलब्ध भ' सकल, एहि संस्करणक परिशिष्ट मे जोड़ि देल जा रहल अछि। कहब आवश्यक नहि जे एहि संस्करण-काल मे तमाम रचना सब कें एक बेर फेर सँ देखि लेल गेल अछि।

आइ मैथिली गजलक क्षेत्र मे अनेक युवा लोक सब सक्रिय छथि। से देखि नैन जुड़ाइए। कैक गोटे तँ बेस तेजस्वी आ प्रतिभाशाली छथि। मैथिली गजलक आजुक परिवेश बेस बहुआयामी, बहुरंगी अछि, सेहो नीक लगैत अछि। 'अपन युद्धक साक्ष्य'क ई द्वितीय संस्करण हम अपन युवा गजलकार सब कें सस्नेह समर्पित करै छियनि। एहि आशाक संग जे अभियान जारी रखता।

गुज-गुज गाम जे ओ इजोत देखै छी
टेमियो अपने आ अपने ओ तेल हेता
जिनकर हँसी मे ने नोर हेतनि, दर्द हेतनि
ओ ने लोक हेता, देवताक देल हेता

पटना
15.10.2016

तारानन्द वियोगी

प्रथम संस्करणक भूमिका

स्पष्टीकरण

एहि गजल सभक मादे किछु कहल जायब हमरा किन्नहु आवश्यक नहि लगैत अछि, कारण एहि बातक प्रति हम पूर्ण विश्वस्त छी जे ई गजल सब अपना मादे खूब नीक जकाँ कहि सकैत अछि, आ इहो जे जे रचना स्वयं अपनहु मादे किछु कहि नहि सकय, तकरा अहाँ रचने किएक मानब? हँ, एकाध गोट स्पष्टीकरण देब आवश्यक अछि।

एखनहु किछु लोक छथि जे मानैत छथि जे कि तँ मैथिली मे गजल लिखले नहि जा सकैछ, अथवा मैथिली मे गजल लिखल नहि जयबाक चाही। मैथिली मे गजल लिखल जा सकैछ--तकर अनेक प्रमाण अछि, आ तकर एक प्रमाण ई पोथियो थिक। जे कहैत छथि जे मैथिली मे गजल लिखल नहि जयबाक चाही--बहुत साफ-साफ कही जे एहि मे सँ किछु गोटे साम्प्रदायिक छथि, आ ओ गजल कें इस्लामी वस्तुजात बुझैत छथि, जकर प्रभाव सँ जगज्जननी मैथिलीक रक्षा कयल जयबाक चाही। कहब आवश्यक नहि जे एहन व्यक्ति दयनीय छथि, आ हिनक समझ पर बहस नहि करबाक अछि। किछु आन व्यक्ति छथि जे गजल कें आभिजात्य शानो-शौकत आ महफिलक वस्तु मानि क' चलैत छथि, आ ईहो मानैत छथि जे गजलक मिजाज मे जे एकटा परम्परागत कोमलता-तरलता होइछ, तकरा कारण समकालीन जीवनक यथार्थ प्रतिबिम्ब आ संघर्ष-यात्राक जनपक्षीय अंकन गजल मे संभव नहि अछि। हिनका लोकनिक आरोप तखन सत्य मानल जा सकैत छल जँ आइ धरि गजल अपन अभिव्यक्ति-सामर्थ्य देखा नहि चुकल रहैत। विविध भारतीय साहित्य मे

आइ पचासो टा सँ बेसी एहन गजलकार भेलाह अछि, जनिक रचना मे जीवन अपन समस्त संघर्ष-क्षमताक संग अनन्त विस्तार लेने तरंगायित भेल अछि। मैथिली मे सेहो एहन सैकड़ो गजल लिखल गेल अछि। उचित तँ ई जे गजल कें एक विधा मानि क' चलल जयबाक चाही आ ई बुद्धिमानी संग राखबाक चाही जे कोनहु विधा स्वयं मे असमर्थ आ अपंग नहि होइछ, ई तँ ओहि रचनाकार पर निर्भर करैछ जे ओहि विधाक माध्यमें अपन सामर्थ्य आ क्षमता दिग्दर्शित करैत अछि।

एकटा प्रश्न हमर गजल सभक भाषा पर उठाओल जाइत रहल अछि। मैथिलीक बहुत रास लेखक-आलोचक-पाठक कें एहि महक उर्दू शब्द आ किछु आन अनभिजात शब्द सब खटकलनि अछि। हमरा कहबाक अछि जे जाधरि कोनहु शब्द घोर अपरिचयक कारण काव्य-बोध मे बाधक नहि बनि जाय, ताधरि ओकर प्रयोगक छूट भेटबाक चाही। आ, से स्थिति एहि गजल सब मे कत्तहु नहि आयल अछि। गजलेक मूल स्वर कें पकड़बाक हेतु हम उर्दू सिखने रही, तें उर्दूक संस्कार किंवा शब्द जँ कतहु आयल अछि तँ हम स्वीकार करैत छी, अनचोक मे नहि आयल अछि, जानि-बूझि क' प्रयोग कयल गेल अछि। किछु अपन असाहित्यिक-अनलंकृत शब्द सभक प्रयोगक मादे बस एतबे जे ई शब्द सब हमर परिवार-टोल-समाजक अवदान थिक, जकरा सँ बचबाक चेष्टा हम कहियो नहि कयल। ओहन भाग्यवान सब मे सँ हम नहि छी, जनिका संस्कार कयल गेल अभिजात भाषा आ बनल-बनाओल बाट विरासत मे भेटैत छनि।

एहि गजल सब मे अनुस्यूत राजनीतिक दृष्टिकोणक मादे सेहो एक गप्प कहबाक अछि। हम स्वीकार करैत छी जे एतय एक हिचक मौजूद अछि, जे हमर जुझारूपन कें कमजोर करैत अछि। मुदा, एतबा दिनक यात्रा मे आइ हम जतय पहुँचल छी, ई हिचक हमरा मे नहि अछि। ई रचना 1983-86क थिक, आ तें ताहि कालक दृष्टिबोध सँ अविच्छिन्न अछि। हमर मान्यता अछि जे दृष्टिकोण कोनहु अकस्मात प्राप्त स्वयंसिद्ध वस्तु नहि थिक, ई एकटा दीर्घ प्रक्रियाक उपरान्त अर्जित फल थिक। एहि प्रक्रियाक एक-एक डेग महत्त्वपूर्ण होइछ, आ हम अपन एहू डेग कें, दृष्टिकोण कें महत्त्वपूर्ण मानैत छी।

एहि संकलनक प्रायः सभटा गजल आकाशवाणी, दरभंगा सँ प्रसारित अछि आ विविध पत्रिकादि मे प्रकाशित अछि। मुदा, एतय छापबा सँ पूर्व एहि मे अनेक परिवर्त्तन-परिवर्द्धन कयल गेल अछि।

आइ, जखन कि ई गजल सब पुस्तकाकार प्रकाशित भ' रहल अछि, प्रिय मित्र रजी अहमद तन्हा बहुत मोन पड़ि रहलाह अछि। आ, एहि प्रकाशनक सम्पूर्ण श्रेय मित्रवर प्रदीप बिहारी कें जाइत छनि।

जमालपुर **तारानन्द वियोगी**
05.11.1990

अनुक्रम

अपन दर्दक नियति कें अपनहि सँ पहिचानल करी
घर मे नहि हो क्यो तँ किछु-किछु काल क' कानल करी⁄-

जँ एना जन-जन एतय फिरिसान नै होइतय
ई व्यवस्था नित एना नितुआन नै होइतय⁄-

आदमी सँ आदमी कें एना नहि लड़बाक चाही
गाम के एकपेड़िया पर काँट नहि गड़बाक चाही⁄-

नहुएँ मुस्काबी तँ दर्द सभटा अँटि ने सकय
ठहक्का दय हँसी जँ, तँ लोक कहय पागल अछि⁄-

जकरा देखू तकरा अपनहि मन के दर्पण मे देखू
अप्पन पीड़ महान बनै छै मिलि क' आनक हाही सँ⁄-

देस मे किछु शान्ति आनल जा रहल अछि
लहू मे तें, जहर सानल जा रहल अछि⁄-

गीत फेरो शान्ति केर गाओल गेलै
यातना कें नियति बनबाओल गेलै⁄-

आदमिक अस्तित्व मे सन्ताप लागल, हौ वियोगी
गाम केर सीमान पर की प्रेत जागल, हौ वियोगी/-

घिचने घिचाइछ नहि जिनगी के गाड़ी
एक खण्ड मुस्की आ बहुते लचारी/-

गाम मे किछु माटि के किछु पाथरक भगवान होइ छै
मुदा निसदिन राम के नहि, दाम के गुणगान होइ छै/-

सागर केर जल पर महावर सँ गीत लिखब
गीत लिखब धरती के, समयक संगीत लिखब/-

राति भरि नै निन्न आबैए किऐक
मोन मे ई द्वैध जागैए किऐक/-

गीत सुनू आ कि कोनो गजल सुनू
अष्टवक्र यातनाक पहल सुनू/-

कही कोना, रातिदिना मोन मे की बीतैए
साँप मुइल बीतैए आ कि नदी बीतैए/-

सोन छल ई जिन्दगी, से ताम भ' गेलै
प्राण मे जे नेह छल, से काम भ' गेलै/-

अन्न-पानिक आसरा ले हम करी की हे प्रभो
अर्थतन्त्रक व्यूह रचने ओ नकलची हे प्रभो/-

आब नहि देसक कोनो पहिचान बाँकी
आ ने मोनक सुरुज बाँकी, चान बाँकी/-

ओहिना के ओहिना जिनगी मरैत गेलै
एक्के-सन फोटो सँ अलबम भरैत गेलै/-

रोशनी चाही, मुदा से ताप ओकर के सहत
क्रान्ति छै ओइ पार लेकिन धार मातल, के बहत/-

तातल सैकत-वारि-बिन्दु-सम हमर सेहन्ता
घायल बेसी, पर दुखार्द्र कम, हमर सेहन्ता/-

बौन भेल जाइछ हमर गाम केर चौक
हिलल-मिलल बैसबाक मेटल सब शौक/-

बिख-सन अवस्था पहाड़-सन जीवन
सुन्न कोनो अतमा आ मोन कोनो उन्मन/-

एहन तँ भेल नहि, स्वयं कें देखि पाबी हम
नहुएँ-नहुएँ कनी देस तलिक आबी हम/-

नान्हि टाक जिनगी आ बड़की टा मौत
रोशनीक आगु-पाछु अन्हरियाक ब्योंत/-

बजरै ले' युद्धो बजरि जेतै देखिहह
पजरै ले' आगियो पजरि जेतै देखिहह/-

गीत जँ गाबी तँ कोनो दर्द जागय
अतल मोनक दोग मे क्यो टीस बागय/-

सुखक एहि संक्षिप्तता मे गम जरूरी
आँखि केर होयब बहुत थिक नम जरूरी/-

मीत हमर ओ गाम बसौलक, मुदा अन्हरिया पसरि गेलै
सुरुज-चान केर जोत जगौलक, मुदा अन्हरिया पसरि गेलै/-

पछबा बसात फेरो वैह बहल जाइ छै
अन्न-पानि खाइ बला आदमी कें खाइ छै/-

देखू ओ लोफर-सन भचर-भचर चहकै अछि
अस्सल मे छी की आ संत कोना कहबै अछि/-

अपने किछु पौलह नहि, दोसर कें की देबहक
नाह डगमगाइछ ई, नीकें-नाँ तों खेबहक/-

अहाँ ओइ तट, हम अइ तट, बीच मे अछि धार कोनो
प्राण सेहो कटल-बँटल, मोन मे छिपार कोनो/-

भोर ने कहियो हएत, सदति जँ अहिना रहलहुँ
राति ने कहियो जाएत, सदति जँ अहिना रहलहुँ/-

राजनीति भटकल तँ डूबल मँझधार जकाँ
नाह डगमगाओल तँ छूटल किनार जकाँ/-

हाथ हमर बाझल अछि, कने इजोत क' दियौ
प्रेत-छाँह जागल अछि, कने इजोत क' दियौ/-

एकटा हमही नहि, आर बहुत भेल हेता
राति मे हँसल हेता, दिन मसान गेल हेता/-

दर्द जँ हद कें टपल जाए तँ आगि जनमै अछि
बर्फ अंगार बनल जाए तँ आगि जनमै अछि/-

गाओल मेघ मलार, केहन ई मौसम आयल
बरिसल मोतिक हार, केहन ई मौसम आयल/-

गजल कें किछु प्रेमदग्धक नोर नहि हेबाक चाही
गजल कें मृत आभिजात्यक संग नहि देबाक चाही/-

ओ दुन्नू जे नैन मे नैन मिला रहलैए
अइ धरती कें बसबा-योग्य बना रहलैए/-

सूतल-जागल सोह अहीं के आबैए
ए रुनझुन, ई नेह कते घुरमाबैए/-

एहन नै जे बर्फ सबटा हिमालयक गलि गेल हो
आ ने एहनो जे नियम परिवर्त्तनक टलि गेल हो/-

प्रेम जगत के पाया छी
बाँकी जे छी माया छी/-

जे अछि से बस आसपास अछि
बखत न पूछू बमपिलास अछि/-

गोपीचन के बाना धेलहुँ
जीबै ले' की की ने केलहुँ/-

हम्मर नाम कमरिया बूझू
बापक नाम पमरिया बूझू/-

घर घर नोंत पुरलियै दद्दा
छोटका कें तजि देलियै दद्दा/-

की जल्दी की देरी बाबा
सब धन बाइस पसेरी बाबा/-

मोटरी-चोटरी सभे बोहेलै आशा मे
मन धरि लागल खूबे मुदा तमाशा मे/-

अहाँ जे निज अपन भय सँ जुग नपै छी, से बेकार
आगि लागल गाम मे घूरा तपै छी, से बेकार/-

लोक सकदम्म छै ऐखन कि कहू छै कि ने
बाट सब बन्न छै ऐखन कि कहू छै कि ने/-

ओ मनुक्ख जे टुकड़ी-टुकड़ी भेल पड़ल अछि
अहाँ चैन सँ रही ओ तकरे लेल मरल अछि/-

जीवन छी आशा निराश किए हएब
जेना रिक्त हाथ एलौं, तेना किए जाएब/-

परिशिष्ट

मदना माय के गीत/-
भैया जी के गीत/-
कोना क' सीता दाइ/-
गोनू झाक गीत/-
प्रीत टुटबाक गीत/-
इजोत बिलेबाक गीत/-
मनमीत के गीत/-

कोशी-गीत : 2008/-
तगमा घुरेबाक गीत/-
सरकार के गीत/-
मिथिला देसक गीत/-
जाति-धरम के गीत/-

अपन युद्धक साक्ष्य

अपन दर्दक नियति कें अपनहि सँ पहिचानल करी
घर मे नहि हो क्यो तँ किछु-किछु काल क’ कानल करी

ओ तँ अहिना मूत्र कें गंगाजलक समतूल कहता
अहाँ सरिपहुँ आगि कें आगिक ज्वलन मानल करी

ठाढ़ भ’ भ’ एक नेना खसि रहल, पुनि उठि रहल अछि
जे अनागत अछि तकर प्रतिरूप ई जानल करी

टीस जँ बढ़ि जाए तँ माटिक गीत गाबी, गुनगुनाबी
आर, नूतन जोतिमय बिरड़ो कोनो छानल करी

जखन कखनहु अपन युद्धक साक्ष्य राखी, त्वरा चाही
चान-सुरुजक संग हमरहु नाम स्वर सानल करी

जँ एना जन-जन एतय फिरिसान नै होइतय
ई व्यवस्था नित एना नितुआन नै होइतय

तरेगनक लघु शक्ति पर निशि खेपि लीतहुँ
आश्वासनक माहिर जँ नभ मे चान नै होइतय

पेट टा भरितय, भने सुगरहि चरबितहुँ
बीच मे जँ ई हमर खन्दान नै होइतय

अहाँ होइतहुँ हम आ हम सब 'जहाँ' होइतहुँ
पंडितक जँ माँझ मे फरमान नै होइतय

कोन बेगरता छलै जे गजल लिखितहुँ
चेतना के शक्ति के जँ ज्ञान नै होइतय

आदमी सँ आदमी कें एना नहि लड़बाक चाही
गाम के एकपेड़िया पर काँट नहि गड़बाक चाही

क्रान्ति होइ छै अमर, लुत्ती आगि के जरिते रहै छै
कोटि-कोटिक यज्ञ मे किछु घीउ टा पड़बाक चाही

ई जँ देखी देस-दुनिञा क्रूस पर टाँगल पड़ल अछि
खुदा कें इंसानियत के घास नहि चरबाक चाही

नेह मे आ देह मे की भेद छै से गमू कनियें
नेह तँ सुकुमारि सँ नहि, माटि सँ करबाक चाही

ओ मरल से दुख देलक, बड़ दुख देलक यौ
ओकरा तँ हारि क' नहि, मारि क' मरबाक चाही

नहुएँ मुस्काबी तँ दर्द सभटा अँटि ने सकय
ठहक्का दय हँसी जँ, तँ लोक कहय पागल अछि

छेकल छै खोत ओकर चिन्तन के धारा के
टक-टक तकैत दृष्टि चेतनाक जाबल अछि

सुनू, कोनो डेग करू तय, आब गम ने खाउ
हमर-अहाँक नाम-गाम बहुत दिनक दाबल अछि

किरिनक जे चोरि केलनि से बरु माँफो होथि
ओकरा न माँफी जे देह रविक पाँगल अछि

भोर सेहो, साँझ सेहो, राति सेहो अहिना हो
भोर-साँझ-राति हमर लहू लाल माँगल अछि

जकरा देखू तकरा अपनहि मन के दर्पण मे देखू
अप्पन पीड़ महान बनै छै मिलि क' आनक हाही सँ

अहँ कें जँ जेबाक दूर हो जुनि ऊघू बीतल पल कें
धारा आगू बढ़ि जाइत अछि छन भरि रुकि क' खाही सँ

सबटा नोर बरसि जाए जहिया जुनि करबै जीवन सँ छल
खाली मन की भरि पाबैए सपना केर भरपाही सँ

अहँ कें जँ जीवन जीना हो लाट धरब दुख-दरदे के
सुख के खाधि गँहीर तते अछि, जुनि लागब हरजाही सँ

अखन राति अछि कते अन्हरिया, मुदा भोर नै दूर बहुत
सूरुज कें नहि छापि पबै छै मेघ अपन परछाही सँ

देस मे किछु शान्ति आनल जा रहल अछि
लहू मे तें, जहर सानल जा रहल अछि

राज मे फेरो बहय करुणाक धारा, दया-माया
संसदहि मे नित्त कानल जा रहल अछि

जे कहैए मनुख छी हम, ध्वजा नहि छी
सैह द्रोही प्रजा मानल जा रहल अछि

आब स्वप्नक नहि कोनहु पहिचान बाँकी
जीवनक वय मुत्यु जानल जा रहल अछि

हम न चिनगी कें कोनो, धधरा बना दी
हमर गजलक स्वर अकानल जा रहल अछि

गीत फेरो शान्ति केर गाओल गेलै
यातना कें नियति बनबाओल गेलै

बेर भोटक आएल तँ सब फेर जुमला
गिद्ध ले' नरमासु रन्हबाओल गेलै

प्राण फेरो हुमचि क' हाक्रोश केलक
आर, फेरो फाँस लटकाओल गेलै

एहन बदलल धर्म-कर्मक अर्थ, जे
राजधर्मक अर्थ बिलमाओल गेलै

दल चलल जे फेर गौरवगान ले'
नरबलिक बहु चिह्न सभ पाओल गेलै

आदमिक अस्तित्व मे सन्ताप लागल, हौ वियोगी
गाम केर सीमान पर की प्रेत जागल, हौ वियोगी

अकादारुन देस-भेसक कथा ककरा कहि सुनेबह
दूध-पानिक हंस के ईमान भागल, हौ वियोगी

रामराज्य-स्थापना ले' भरत-लक्ष्मण झगड़ि रहला
आमजन शंबूक भेलै बड़ अभागल, हौ वियोगी

कतय जेबह, त्राण पाबय कोन देवक नाम लेबह
सभ घरक मुँहथरे पर छै फाँस टाँगल, हौ वियोगी

शासनक दूमुँहाँ साँपक प्राणवायु बढ़ले जाइछ
नेहरुक अइ श्राद्ध मे किछु साँढ़ दागल, हौ वियोगी

घिचने घिचाइछ नहि जिनगी के गाड़ी
एक खण्ड मुस्की आ बहुते लचारी

अप्पन के तीर एतय आन सँ गँहीर गथय
हलुक-हलुक पवन हुअय पाथर सँ भारी

चेतनाक गहबर मे उग्गय नहि सुरुज कोनो
देश हमर कएल करय भाषणक तैयारी

देवाश्रम की करय जेबह हौ तारानन्द
देवताक आसन पर बैसल मदारी

मोन हुअ' उन्मन जँ, मोन बान्हि क' रखिहह
मुदा, युद्ध सरिपहुँ ई रखिहह तों जारी

गाम मे किछु माटि के किछु पाथरक भगवान होइ छै
मुदा निसदिन राम के नहि, दाम के गुणगान होइ छै

सात सुर मे देश के सब भाट गाबय वन्दना
देवता के काज टा बस भक्त ले' गुमनाम होइ छै

शान्ति-चैनक आसरा नइँ, गाम उजड़ल, शहर उजड़ल
चुप रहू, ई देश के किछु ठीक सँ निर्माण होइ छै

आयु बीतय आ कि धधरा प्राण के धधकले जाइछ
छाउर थिक ई जिन्दगी कि क्रान्ति के सन्धान होइ छै

मृत्यु हो समकक्ष तें की चुप्प रहने काज चलतै
सब सदी के अन्त किछु मरघटे-सन सुनसान होइ छै

सागर केर जल पर महावर सँ गीत लिखब
गीत लिखब धरती के, समयक संगीत लिखब

डबरा कें सागर बुझि अहाँ बरु मथैत रहू
हम सब अइ खिस्सा कें मौसम-विपरीत लिखब

धू-धू क' जरि जाएत रंग-रंगक परदा सभ
युद्धहि मे शामिल हम युद्धक परतीत लिखब

देश हमर जागत आ चक्र एना चलि ने सकत
हारि लिखब झण्डा के, आदमी के जीत लिखब

हम ने कोनो पाथर पर गाछ रोपय चाहै छी
लेखक छी, सभे लिखब, मीठ लिखब, तीत लिखब

राति भरि नै निन्न आबैए किऐक
मोन मे ई द्वैध जागैए किऐक

भागि एलौं स्वयं कुण्ठा-घुटन सँ
मोन सँ नै घुटन भागैए किऐक

मानलहुँ जे राति नहि होइ छै गरीबक
दिनहु मे अन्हार लागैए किऐक

कोन रस्ता द' क' निकली, चैन पाबी
यातना ई फाँस टाँगैए किऐक

गेरु रंगक गाछ पर ओ गिद्ध बैसल
रोज हमरे प्राण माँगैए किऐक

गीत सुनू आ कि कोनो गजल सुनू
अष्टवक्र यातनाक पहल सुनू

जिनगी जै आस मे खेपैत रही
ढनमना क' खसल सैह महल, सुनू

भेल नै इजोत, मुदा आँच बहुत
बन्न घर मे नीति कोना बहल, सुनू

मोन जखन बेकल अन्हरिया मे
लाउ कने आगि, हमर कहल सुनू

बचल रहल कोशी मे नेह, देह बचल रहल
योजनाक बुर्ज कोना ढहल, सूनू

कही कोना, रातिदिना मोन मे की बीतैए
साँप मुइल बीतैए आ कि नदी बीतैए

दोख हमर यैह जे हम भागी नै, जागै छी
जागै छी तही लेल प्रलय-घड़ी बीतैए

शब्द सभक अर्थ एना बदलल, नै बूझि पड़य
नेकदिली बीतैए आ कि बदी बीतैए

उनटलहा वायु बहय, प्राण कहय सावधान
प्राणहरण बीतैए बिसम सदी बीतैए

बीतल जे तक्कर की सोच करू बेरथ के
पकड़ब जे बीतैए अही घड़ी बीतैए

सोन छल ई जिन्दगी, से ताम भ' गेलै
प्राण मे जे नेह छल, से काम भ' गेलै

अपन कहि-कहि विश्व कें चिकरैत छल जे
धूर-धूरक बँटल-सन से गाम भ' गेलै

एना महगी कें किछो कम कएल गेलै
आठ आना आदमी के दाम भ' गेलै

क्यो कहल पाजी कि क्यो दुष्टा कहल
बात हक के चलल कि बस बदनाम भ' गेलै

सुनल ओइठाँ एखन धरि ओ संत* छथिहे
अइ मुलुक पर तँ विधाता बाम भ' गेलै

*गाँधी जीक प्रतीक नेल्सन मांडेला

अन्न-पानिक आसरा ले हम करी की हे प्रभो
अर्थतन्त्रक व्यूह रचने ओ नकलची हे प्रभो

दौड़ि आयल भूख सरिपहुँ अवश छी हम, भेल उबडुब
जिन्दगी जीबाक लिलसा पड़ल परती हे प्रभो

वचन के की अर्थ छै आ अर्थ की छै आदमी के
आदमी छी हम की कोनो मुइल किछु छी हे प्रभो

झुकि किऐ ई गेल छै हह! डाँड़ सभ के मानधन!
आर फेरो बढ़ि रहल छै बुतपरस्ती हे प्रभो

ई प्रतीक्षा, ई युयुत्सा, बीच मे हम भार लदने
चेतना के क्रान्त-छाया की गुम्हरती हे प्रभो

आब नहि देसक कोनो पहिचान बाँकी
आ ने मोनक सुरुज बाँकी, चान बाँकी

बरख-बरखक अवधि धरि जे खून पीलनि
आब हुनका मासु के अरमान बाँकी

गाछ के सब पात मे बादूर लटकल
शब्द टा आब की ईमान बाँकी?

आस अछि जे नदी-जल सँ धाह उठतै
जखन धरि अछि देस, देसक प्राण बाँकी

मुइल गामक साँस कें संजीवनी दी
माटिपानिक प्रति हमर अरमान बाँकी

ओहिना के ओहिना जिनगी मरैत गेलै
एक्के-सन फोटो सँ अलबम भरैत गेलै

बर्ख-बर्ख पहिने जे डिबिया जरैल गेल
भेटल ने जोत मुदा टेमी जरैत गेलै

गन्ध आएल बाद मे कि पोल जखन खूलि गेल
पहिनहि सँ बन्न घरक मुरदा सड़ैत गेलै

एहन भेल राज-पाट, एहने अनुशासन जे
आदमीक खेत कोनो आदमी चरैत गेलै

दलितक ओ दाबी आ हँसी कोनो बहुजन के
आर्यन के पाँजर मे कील सन गड़ैत गेलै

रोशनी चाही, मुदा से ताप ओकर के सहत
क्रान्ति छै ओइ पार लेकिन धार मातल, के बहत

एतय आबी ई समस्या, ओतय भागी ओ समस्या
आदमी के द्वैध सरिपहुँ कोना भागत के कहत

चाह अछि जे दर्द अप्पन स्वयं अपनहि पीबि ली
सभक अप्पन दर्द छै, से दर्द हम्मर के सहत

बालु पर छै नाम लीखल शान्ति के आ व्यवस्था के
जे बुझै छै चालि ओकर, संग ओकर के रहत

जे अहाँ कें गारि द' क' मारि क' क' चुप कराबय
एहन करुणाहीन नृप के शरण बाजू के गहत

तातल सैकत-वारि-बिन्दु-सम हमर सेहन्ता
घायल बेसी, पर दुखाईं कम, हमर सेहन्ता

आदि-अन्त धरि सब पन्ना पर एक्के छाया
दुःख-श्रान्ति के खूलल अलबम, हमर सेहन्ता

राजयोग के साधक बैसथि छत्ता तनने
लीखय घाव गँहीरक अनुक्रम हमर सेहन्ता

हमर सेहन्ता बरकय सद्यः अलकतरा-सन
खुलल रौद मे कारी परचम हमर सेहन्ता

आन ककर के होयत बूझत मर्मक भाषा
हमर मित्र आ हम्मर हमदम हमर सेहन्ता

बौन भेल जाइछ हमर गाम केर चौक
हिलल-मिलल बैसबाक मेटल सब शौक

कहलक जे हमर ई तोहर ओ भदेस
धूर-धूर बाँटि देलक दैबा गुँहखौक

सुरुज उगल, डूबि गेल ककरा अछि ज्ञान
ग्रामदेव आन्हर आ ग्रामसभा बौक

पाथर मे देवता आ देस मे आतंक
नेता मे दैत्य तखन कोना क्यो बचौक

नहि चाही कोट आ कि नहि चाही नोट
राति टा मे पल भरि ले' निन्न बस अबौक

बिख-सन अवस्था पहाड़-सन जीवन
सुन्न कोनो अतमा आ मोन कोनो उन्मन

देह हमर देखि लेल तखनहि बुढ़ारी
हुले-हुले सुनि-सुनि क' बीतल जे नेनपन

रुइया मे लागि कोनो आगि जकाँ झबर-झबर
जरा गेलै सपना आ कसा गेलै बन्हन

छल अकास मोन हमर चुट्टी के बील भेल
सिमटि रहल हृदय जेना परदा-सन छन-छन

बरदक जँ काज रहै जोतब सरपट्ट खेत
माछियोक भाँज रहै कान करब भनभन

एहन तँ भेल नहि, स्वयं कें देखि पाबी हम
नहुएँ-नहुएँ कनी देस तलिक आबी हम

सुरुजक चारु दिस अन्हार छै, अन्हार सघन
मोन मे दूफरिया, बित्त जीह बाबी हम

रीत-परतीत एहन आर कतहु नै देखल
हमहि रोपि एलहुँ भ्रूण, कण्ठ दाबी हम

धर्मक द्वैध कतय अन्त, से तँ नहि बूझल
बूझल यैह जे फरकी अपन सजाबी हम

देश हो विश्व के सिरमौर आ पाछाँ ने रहय
दिल बइमान आ बदरंग गजल गाबी हम

नान्हि टाक जिनगी आ बड़की टा मौत
रोशनीक आगु-पाछु अन्हरियाक ब्योंत

शोणित के दाग एतय पसरल तिरंगा पर
गाँधी के श्राद्ध मे गिद्ध सब कें नोंत

देसक इतिहास कतहु कानय चौबट्टी लग
राजनीति बनि गेली चेतनाक सौत

आदिम अन्हरिया मनसूबा मे बीस
दूर कतहु पड़ा रहल भविखक इजोत

जोर करू, थोड़बे दिन सुन्न रहय प्राण
सूखय नहि फेर बहय आस्थाक स्रोत

बजरै ले' युद्धो बजरि जेतै देखिहह
पजरै ले' आगियो पजरि जेतै देखिहह

सत्ता के मद मे जे युग सँ नहि सम्हरल
कोटि कसल हाथें सम्हरि जेतै देखिहह

काजर सँ रहतै नहि लेभरल ई देसकोस
रंग रंगक सपना पसरि जेतै देखिहह

आइ धरि जँ भेटल अछि बगुले कें माछ बहुत
माझी के हिस्सा सुतरि जेतै देखिहह

आओर तखन उतरतैक धरती पर इन्द्रधनुष
पलास-आम-चम्पा मजरि जेतै देखिहह

गीत जँ गाबी तँ कोनो दर्द जागय
अतल मोनक दोग मे क्यो टीस बागय

टीस जे दहकय हिया मे टेक धयने
की कहू हम, सैह सब सँ असल लागय

हुलकि रहलै लगे कोनो क्रान्ति-छाया
आर, मोनक शान्ति कत्तहु दूर भागय

ई शहर, ई सड़क, ई वीरान मन
अहँक बीतल नेह-सन किछु अपन लागय

प्रीत जे बिलहय अहँक मुस्की तरुण
सैह हमरा सँ हमर बलिदान माँगय

सुखक एहि संक्षिप्तता मे गम जरूरी
आँखि केर होयब बहुत थिक नम जरूरी

आसरा जीबय, मरय नहि दोख द' क'
प्राणपण नै हो तयो संगम जरूरी

शान्ति ले' मरि जाएब थिक आदर्श जीवन
क्रान्ति ले' जीबी, सेहो नहि कम जरूरी

रक्त चूसय आ कि माँगय प्राण नदिया
प्यास केर पहिचान अछि हरदम जरूरी

प्रीत पुरिबा बहय झहरय बुन्न स्नेहिल
मानवक अस्तित्व पर चिन्तन जरूरी

मीत हमर ओ गाम बसौलक, मुदा अन्हरिया पसरि गेलै
सुरुज-चान केर जोत जगौलक, मुदा अन्हरिया पसरि गेलै

लाज पीबि क’ उल्लू खखसल, गपलौसी सब स्यार देलक
भगजोगनी-गन पाँखि नचौलक, मुदा अन्हरिया पसरि गेलै

मोम जकाँ बरकलै युयुत्सा, काल-शिला पर जमि रहलै
समय नचा क’ बहुत घुमौलक, मुदा अन्हरिया पसरि गेलै

हमरा तालें बहिरा नाचल, तोरा गालें प्रात भेलह
अन्य पुरुख सभ पेट बजौलक, मुदा अन्हरिया पसरि गेलै

बात गौरवक नहि छियैक ई, बात छियै ई नीयत के
खुलल मुँह मे ऊक लगौलक, मुदा अन्हरिया पसरि गेलै

भीतर दुबकल नकली ईश्वर, नहुएँ-नहुएँ प्रकट भेलै
भक्तजना सब दीप जरौलक, मुदा अन्हरिया पसरि गेलै

मन्दिर के शत-शत मुरूत सब देवत्वक रस सोंखि लेलक
धर्म मूड़ि मे सूदि मिलौलक, मुदा अन्हरिया पसरि गेलै

पछबा बसात फेरो वैह बहल जाइ छै
अन्न-पानि खाइ बला आदमी कें खाइ छै

एकटंगा देने ठाढ़ सुरुज ओकर कठघरा मे
लैम्प पोस्ट सभक बल्ब साँझे मिझाइ छै

पसरि गेलै जत्था सब जोगी-महतमा के
खाइ छै तँ देव-भोग, खून मे नहाइ छै

बत्तिस टा दाँत-बीच, कुचल कटल जीह एक
बान्हल छै कानुन मे किच्छु नै फुराइ छै

लोक कहय--एलैए नबका सम्राट एगो
नयनसुक्ख नाम, मुदा अन्हरू के भाइ छै

देखू ओ लोफर-सन भचर-भचर चहकै अछि
अस्सल मे छी की आ संत कोना कहबै अछि

ओ कोनो जुल्म करथि दण्ड सेहो वैह भोगथि
धांगल अइ दुनिया मे एहनो कानून नै अछि

सत्ता-बदल, राज-बदल, नियम सभक फेर-बदल
बाहर सभ बदलि जाइछ, भीतर नै बदलै अछि

लागैए--आइ राति बरसतैक आर्द्र मेघ
आइ हमर आशा के बाम नयन फरकै अछि

खून जमा राखह हौ, खून जमा क' राखह
खूनक बिना ने ई आगि कतहु लहकै अछि

अपने किछु पौलह नहि, दोसर कें की देबहक
नाह डगमगाइछ ई, नीकें-नाँ तों खेबहक

किनबा के छनि हुनका पाभरि ईमान-धरम
दाम ओना जे माँगह, दाम तों कते लेबहक!

नहि चलतह कुरसी ई, नहि चलतह पहिया ई
जाह राज-मिस्त्री लग दोसर किछु आन टेबहक

देस गेलह अमरीका, गाम चीन मे लटकल
हौ बाबू बाजह ने आब तों कतय जेबहक?

चिर्र-चोंत फाटल छह देसक देबाल आइ
गप्प देब बन्न करह, आबह आ माटि लेबहक

अहाँ ओइ तट, हम अइ तट, बीच मे अछि धार कोनो
प्राण सेहो कटल-बँटल, मोन मे छिपार कोनो

चौबगली तड़क-भड़क, ज्योति-पर्व, सम्मेलन
मुँह बौने बीच मे अछि आदिम अन्हार कोनो

लक्ष्य तँ बरु नहिञे छल भेटब अइ बाट दने
भेटल तँ रुइया तर करिया पहाड़ कोनो

हयौ, हम तँ क्रोध आ विद्रोहक स्वर बाँटै छी
बाँटी की? अछिये नहि मुस्किक अमार कोनो

बौक-बहिर पंगु बनल, शून्य दृष्टि, चिन्ताकुल
कुरसी दिस ताकैए आँगन-दुआर कोनो

भोर ने कहियो हएत, सदति जँ अहिना रहलहुँ
राति ने कहियो जाएत, सदति जँ अहिना रहलहुँ

बोइन ने अपन कमाओल भेटत, चैन ने भेटत
कौआ मोती खाएत, सदति जँ अहिना रहलहुँ

अहिना सब दिन कानब, सब दिन पंथ निहारब
काल जबन अगड़ाएत, सदति जँ अहिना रहलहुँ

एना अपाहिज रहब तँ अहिना धार खियायत
दुश्मन नहि पकड़ाएत, सदति जँ अहिना रहलहुँ

नहुएँ-नहुएँ करत असर ई हवा नशोरी
कर्मठता बिझियाएत, सदति जँ अहिना रहलहुँ

के बैसल अछि अहँक दर्द ले, अहँक सुगति ले
के ज्वाला अपनाएत, सदति जँ अहिना रहलहुँ

पड़ल जँ रहलहुँ एना, जँ रहलहुँ घाड़ नमौने
आएल भोर चलि जाएत, सदति जँ अहिना रहलहुँ

राजनीति भटकल तँ डूबल मँझधार जकाँ
नाह डगमगाओल तँ छूटल किनार जकाँ

वचनक ओ सागर जे उमड़ल आ ठमकि गेल
सपना जँ टूटल तँ उसरल बजार जकाँ

मोरपाँखि आशा ओ एलै आ जाइत गेलै
देस हमर बचलै तँ धाङल पुआर जकाँ

जीबा के जिनगी से आइयो ओ जिबिते अछि
जिनगी कें देखल तँ उजरल दुआर जकाँ

पाबै ले' चाहथि जे सुन्नर अतीत फेर
जबदायल मौसम-सन पसरल अन्हार जकाँ

हाथ हमर बाझल अछि, कने इजोत क' दियौ
प्रेत-छाँह जागल अछि, कने इजोत क' दियौ

यादि करी टूटन हम आ कि मूल्य बिसरि जाइ
दीग बड़े लागल अछि, कने इजोत क' दियौ

टपर-टोइ द' द' क' यै' मंजिल ताकल छी
नै अन्हार भागल अछि, कने इजोत क' दियौ

की करी जिजीविषाक? रूसि-कानि पड़ा रहलि
सैह केहन पागल अछि! कने इजोत क' दियौ

एतय घुरी आ कि ओतय युद्ध लेल निकलि जाय
बाट हमर साजल अछि, कने इजोत क' दियौ

एकटा हमही नहि, आर बहुत भेल हेता
राति मे हँसल हेता, दिन मसान गेल हेता

जिनकर हँसी मे नै नोर हेतनि, दर्द हेतनि
ओ ने लोक हेता, देवताक देल हेता

गुज-गुज गाम मे जे ओ इजोत देखै छी
टेमियो अपने आ अपने ओ तेल हेता

मोन मे चोर मुदा ठोर राम-राम भरल
देखबनि फेर इहो हुनके जकाँ फेल हेता

काल'के गतिक जखन कनियो अनुमान नै हो
राजा होथु भने, अन्त्यम बकलेल हेता

दर्द जँ हद कें टपल जाए तँ आगि जनमै अछि
बर्फ अंगार बनल जाए तँ आगि जनमै अछि

ओहिना भूख दुक्ख त्रास बाट नहि छोड़त
काल्हुक स्वप्न बुनल जाए तँ आगि जनमै अछि

माटिक लोक केहन यातना मे मुइल, मरय
लोकक दोख बुझल जाए तँ आगि जनमै अछि

शोषणक चक्र सहनशक्ति राजनीति बनय
मगजक नस जँ तनल जाए तँ आगि जनमै अछि

लोकक भोट गनल गेल राजकुल जनमल
लोकक शक्ति गुनल जाए तँ आगि जनमै अछि

गाओल मेघ मलार, केहन ई मौसम आयल
बरिसल मोतिक हार, केहन ई मौसम आयल

सात रंग मे रँगलि सोहागिन धरती रानी
मानि लेल मनुहार, केहन ई मौसम आयल

एहन जुआनी आयल, मानल रीत-नीत नहि
उबडुब नदी-किनार, केहन ई मौसम आयल

तन केर लघिमा हेंट, गेंठ मन के सोझरायल
सरिसो भेल पहाड़, केहन ई मौसम आयल

मोनक झंकृति समटि सकल नहि मोन-माँझ, ई
बतहा हृदय-सितार, केहन ई मौसम आयल

गजल कें किछु प्रेमदग्धक नोर नहि हेबाक चाही
गजल कें मृत आभिजात्यक संग नहि देबाक चाही

बीच मे किछु शब्द-भ्रम वा आग्रहक तटबन्ध नहि हो
गजल कें अइ हृदय सँ ओइ हृदय धरि जेबाक चाही

माटि-पानिक गर्भ सँ जे जीवनक स्वर मुखर होइछ
ओहि स्वर मे गजल कें निज अपन स्वर पेबाक चाही

गजल के ई धर्म थिक जे आदमिक भवितव्य सजबय
व्यूह मे बौआइत जन कें ज्योतिपथ देबाक चाही

जाल मे ओझराएल मनुखक कतय मंजिल, की बेगरता
दी उतारा, से चुनौती गजल कें लेबाक चाही

ओ दुन्नू जे नैन मे नैन मिला रहलैए
अइ धरती कें बसबा-योग्य बना रहलैए

पिघलल-पिघलल मोम बनल अछि सुग्गा-सुग्गी
देखियौ नेह करामत केहन करा रहलैए

जुड़ि रहलैए स्वर्ग-लोक आ धरतिक रिश्ता
जाति-धरम के झगड़ा-दन्न मिटा रहलैए

ई जिनगी छी अकटा-मिसिया आ कि धान छी
भरल बखाड़ी उकटा-भाँड़ मचा रहलैए

बन्न करू पंडित-मुल्ला ई पोथी-पतरा
आशीषक घन अल्ला खुद बरसा रहलैए

सूतल-जागल सोह अहीं के आबैए
ए रुनझुन, ई नेह कते घुरमाबैए

ठहरल जल छी ठण्डा-ठण्डा, इतमिनान छी
गरम हवा ई हलचल कोना मचाबैए

लचक अहाँ के पत्ता-पत्ता, कसक फूल के
अइ बगिया के माली मोहि बताबैए

जे कहबै से कहबै लेकिन अखन ने मानब
अखन मेघ मनुहार हार बरसाबैए

जै मुस्की सँ अहाँ करै छी अल्लो-मल्लो
सै' मुस्की ई देखियौ रौद उगाबैए

ठाढ़ रहै छी एक पएर सँ, एक चलै छी
केहन अजूबा काज प्रेम करबाबैए

एहन नै जे बर्फ सबटा हिमालयक गलि गेल हो
आ ने एहनो जे नियम परिवर्त्तनक टलि गेल हो

एना जायब हम अहाँ के हृदय सँ, मन-प्राण सँ
जेना कोनो कुकुर भरि दिन भूकि क' चलि गेल हो

अते दिन मे मातृभूमिक हाल लखि क' बुझि पड़ल
जेना छलिया हाक द' आ वाक द' छलि गेल हो

वैह रुनझुन, वैह चुहचुह, वैह खल-खल हँसी राजित
मोन मे सालैए जनु बेरथ हमर बलि गेल हो

बेखुदी मे छी, ने सूतल, आ ने जागल, आ ने सुगबुग
अपन लागैए जेना अपने कसक खलि गेल हो

प्रेम जगत के पाया छी
बाँकी जे छी माया छी

आब हमहुँ विश्वास करै छी
सब के जड़ि मे काया छी

जीवन छी दस हिल-मिल जीयब
जँ से नहि तँ छाया छी

टाका छी, जँ खर्च करू तँ
रुकल तँ प्रेतक साया छी

कहबनि जे से सोझे कहियनु
की मिडिया की भाया छी

जे अछि से बस आसपास अछि
बखत न पूछू बमपिलास अछि

चुहचुहार छै चौक ओम्हरुका
एम्हर तँ चुल्हो उपास अछि

गाँधी जी के नना छथिन ई
हिनका मे सब बात खास अछि

टुटल ताग कें जे क्यो जोड़ता
अइ सुराज मे हुनक नाश अछि

एक रंग के रंगत लखि-लखि
आइ तिरंगा बदहबाश अछि

गोपीचन के बाना धेलहुँ
जीबै ले' की की ने केलहुँ

मास दिना मे केलक जे ओ
ततबे ले हम जीवन देलहुँ

रही अड़हुलक फूल हियबगर
बितते साँझ किदन तर गेलहुँ

ई ने बूझब जे बहुत बूड़ि छी
बहुत बूड़ि हम की भ' पेलहुँ?

देलहुँ जे, से बाते छोड़ू
कहू यैह जे की-की लेलहुँ

आब वैह की लरना लाड़ी
आब बहुत जकथक हम भेलहुँ

हम्मर नाम कमरिया बूझू
बापक नाम पमरिया बूझू

बास तँ अछि सौंसे मिथिला मे
लेकिन ठाँ घोघरड़िया बूझू

कनकजीर सँ भिड़ैत आएल छी
हमरा धान दसरिया बूझू

बूझू तँ हम इनकिलाब छी
नै तँ बस खड़खड़िया बूझू

जे बुझता से रेणु कहौता
हमरा जिला अररिया बूझू

घर घर नोंत पुरलियै दद्दा
छोटका कें तजि देलियै दद्दा

जे केलक अहँ तक्कर केलियै
अनका ले' की केलियै दद्दा

अहिंक कोर चढ़ि कुहकलि बयना
तकरो घेंट कटलियै दद्दा

उचित बात जँ क्यो किछु बाजल
कहि बलेल अनठेलियै दद्दा

नहि सुनलहुँ जँ आनक, छोड़ू
अपनहु हिया जबलियै दद्दा

जाउ, जाइ बेर की हम बाजू
'धर्म'क टेक रखलियै दद्दा

की जल्दी की देरी बाबा
सब धन बाइस पसेरी बाबा

राजा-नाम सु-राजा जानू
देशक नाम नशेड़ी बाबा

साधू, चोर, गिरहकट नायक
चोरी, तुम्माफेरी बाबा

नेता छी ई, माया बुझियौ
नै तेरी, नै मेरी बाबा

थोक-भाव मनसूबा पोसू
टूटत बेरा-बेरी बाबा

मोटरी-चोटरी सभे बोहेलै आशा मे
मन धरि लागल खूबे मुदा तमाशा मे

अप्पन सुख-दुख, अप्पन संक्रट, सब किछु बिसरल
सपने तेहन छलैक जुलुम हुनि भाषा मे

नुका-चोरा क' सही-गलत ओ सब किछु करता
मुदा, परम धर्मावतार निज बासा मे

अहू साल बस ल' द' क' कहुना क' खेपल
अहू साल मन कैद रहल प्रत्याशा मे

जिनगी छी ई, आ कि कथू छी, जा-जा सोचल
बाझि गेलहुँ ता जम के फेकल पाशा मे

अहाँ जे निज अपन भय सँ जुग नपै छी, से बेकार
आगि लागल गाम मे घूरा तपै छी, से बेकार

ई कोना क' हएत जे गति-चक्र समयक उनटि जायत
धर्म-क्षय के व्यथें जे थर-थर कँपै छी, से बेकार

भ' सकय तँ अपन ब्राण्डक संग गामक आड़ि टपियौ
सुहृद मन सँ हुनक हटिया मे खपै छी, से बेकार

काज जे छल पड़ल तकरा दीस ककरो ध्यान नै अछि
ओ अहाँ कें, अहाँ हुनका जे चपै छी, से बेकार

मैथिली के गीत मे अहँ रूप ल' ल' प्रकट होइ छी
आर, ओम्हर विकट भाखा मे छपै छी, से बेकार

ओ तँ अप्पन असल बाना मे उतरला दिन गनैते
अहाँ एखनहुँ नाम हुनके टा जपै छी, से बेकार

हम तँ अप्पन छी अहाँ के, चिन्हू, जानू, टोबि लियऽ
दुरहि सँ असमंसजक नजरें भँपै छी, से बेकार

लोक सकदम्म छै ऐखन कि कहू छै कि ने
बाट सब बन्न छै ऐखन कि कहू छै कि ने

गीत के भास, ठोरक हास, आस मिल्लत के
त्रास सँ सन्न छै ऐखन कि कहू छै कि ने

जगमग जोत सगर विश्व मे पसरल, लेकिन
घर भकोभन्न छै ऐखन कि कहू छै कि ने

भाषणक मोल कते दीब, जीब महग कते
सस्त बस अन्न छै ऐखन कि कहू छै कि ने

घुरता राम जँ वन सँ तँ कहू की देखता
देश ई धन्न छै ऐखन कि कहू छै कि ने

ओ मनुक्ख जे टुकड़ी-टुकड़ी भेल पड़ल अछि
अहाँ चैन सँ रही ओ तकरे लेल मरल अछि

जे दीपक हो जड़इत, चहुँदिस तम कें चिरइत
तकरे दम पर आन दीप मे जोत बरल अछि

नेता कें नै देखियौ, नेता कें की देखबै
जत्तहि टोबबै तही ठाम ई जन्तु सड़ल अछि

लोकतंत्र अछि, संविधान अछि न्यायालय अछि
बाहर बाहर ठोस आ भीतर कते तरल अछि

भूमंडल के दौर मे शामिल अहाँ भोग ले'
किन्तु ने जानी विभव-गाछ फल कोन फड़ल अछि

हिन्दुत्वक मादे सोचलहुँ तँ ख्याल उठल
ऐंठी बचले अछि एखनहु बस डोर जरल अछि

जीवन छी आशा निराश किए हएब
जेना रिक्त हाथ एलौं, तेना किए जाएब

बुत्ता अछि छोट हमर, काल थिका पैघ
अपना मे दुनू भाँइ द्वैध किए लाएब

पंछी के चुनमुन आ बिजुबन के रंग
मनुखक ई रिश्ता हम आर कतए पाएब

मोन रहत रौदी के गाछ, रौद ठंढ़ी के
छपर-छपर बरखा के कौखन बिसराएब?

भरल मोन लागैए, से तँ बहुत नीक बात
मुदा गीत बाँकी जे से ने किए गाएब

परिशिष्ट

मदना माय के गीत

मदना-माय के छलै सेहन्ता
खइतहुँ पूरी-खीर
सेहो मन लगले रहलै

बड़ अबोध मन, काँचे तन लए
पहुँचल छलि ओ सासुर
खूब खटय ओ, खूब कमाबय
भरय ने तैयो आँजुर

गललै देह, पड़ैल जुआनी
जिनगी पीड़े-पीड़
मुदा, मन लगले रहलै

बड़े आस सँ मदना-सन-सन
चारि पुत्र जनमाओल
सोचय, हएत कमासुत बेटा
भागत दुख, मन भाओल

जखनहि आयल पुतहुआ, भेला
भिन्न-भिन्न सब वीर
ओकर मन लगले रहलै।

आएल बुढ़ारी, मदना माय के
संग ने देलकै दैवा
बेटा-पुतहु के, पोता-पोतिक
करय दम्म भरि सेवा

अन्त समय सड़के पर बितलै
एहिना तुबल शरीर
मुदा, मन लगले रहलै

भैया जी के गीत

भैया सौंसे जनम गमौलनि सुखक तैयारी मे
नोन-हरदि-तरकारी मे जी।

भैया के नेनपन पढ़िते बीतल
तहिना गेल जुआनी आधा
भैया रन-बन खूब बौएला
तखनहु जिनगी बाधे-बाधा
कहुना नोकरी किनलनि जथा बेचि पैकारी मे
नोन-हरदि-तरकारी मे जी।

भैया बड़-बड़ पाइ कमौलनि
बहु-बेटा कें खूब खोआओल
गाँ मे बड़का महल बनौलनि
लोकक हिरदय साँप लोटाओल
लेकिन चैन-निन्न सब बिला गेलनि बटमारी मे
नोन-हरदि-तरकारी मे जी।

भैया वृद्ध भेला तन काँपय
भैया राम-नाम मे लगला
बेटा सब अबण्ड बहरेलनि
शान्तिक स्वाद ने पाबय सकला
अहिना जमराजक घर चलला महा लचारी मे
नोन-हरदि-तरकारी मे जी।

भैया सौंसे जनम गमौलनि सुखक तैयारी मे
नोन-हरदि-तरकारी मे जी।

सीता दाइक गीत

(महेन्द्र मलंगियाक नाटक ‘ओ खाली मुँह देखै छै’ देखलाक बाद)

आगू पाछू भरिया जेतनि
बीचोबीच कहरिया जेतनि
एना क’ सीता दाइ सासुर जेती...

बाँसक फरकी पर लेटल जेती
गोइठा-करसी पर गेंठल जेती
छोटका भाइ मुँहबत्ती देतनि
आङ समाङ ने संग क्यो जेतनि...

मिथिला-वासिक भक्क ने टुटतनि
जे बाँचल छनि, सेहो लुटतनि
अपन अपन सब नरक बनौता
बेटिक खून मे खूब नहौता...

तिलक-दहेज ने छोड़ल जेतै
येह रोग अइ देस कें खेतै

कहियो राम कसैया भेलनि
जनको आब मुदैया भेलनि...

कोना क' सीता दाइ सासुर जेती
ककर ककर ओ भार उठेती
ककर ककर ओ भूख मेटेती
किए ने भ्रूणहि मारल जेती??

गोनू झाक गीत

गुनियाँ देखलौं गे मैया
निरगुनियाँ देखलौं गे
एके बेर मरि क' हम सौंसे
दुनियाँ देखलौं गे

टाका के सब यार एतय छै
अतमा के नै यार
अही भाँज मे सब लागल जे
कहुना दाँव सुतार

महफिल देखलौं गे मैया
हम तहसिल देखलौं गे
स्वारथ के सब साँप करैए
सहसह देखलौं गे

जिनगी भरि जे संग चलल छल
सेहो अन्त मे छोड़य

जकरा ले' हम की नै केलौं
सैह हृदय कें तोड़य
गौंओं देखलौं गे मैया
हम घरुओ देखलौं गे
एके बेर मरि क' हम मैयो
तोरो चिन्हलौं गे

प्रीत टुटबाक गीत

उमड़ि-घुमड़ि क' गरजि-तरजि क'
फेर बतहबा बादरि आयल

फेर हमर लहकल मन के चिनगी सुनगौलक
फेर हमर अव्यक्त दुखक छाया मुँह बौलक
कतय हएत मंजिल हम्मर यात्रा केर साँझक
ऐ देबाल पर सटल कलेण्डर खूब सतौलक
पछड़ि-पछड़ि क' ससरि-ससरि क'
मुस्की हम आशा के घायल

बरखा के एहि बुन्न-बुन्न सँ देह कँपैए
देहक अढ़ ल' प्राण अपन अस्तित्व झँपैए
हम छी सरिपहुँ बालुक भीतक घरक रचयिता
हएत हमर ई महल ध्वस्त, से मोन कहैए
लचरि-लचरि क' कुहरि-कुहरि क'
श्वास कोनो मातम-धुन गायल

पूजा केर हम फूल छलहुँ, से भासल जाइ छी
प्रेमक दारुण अन्त! कतेक तरासल जाइ छी
जीबह-जागह मेघ, अपन कर्त्तव्य निमामह
हमरा की अछि लाभ आब हम प्यासल जाइ छी
रुनुकि-रुनुकि क’ झुनुकि-झुनुकि क’
आब ने बाजय आसक पायल

इजोत बिलेबाक गीत

चानन-सन जे गीत लिखल छल ऋतुक भाल पर
खंडित-खंडित भेल
मूक मन! सपना कत्तय गेल?

दीर्घ वृत्त मे दर्द नचै छल नहुएँ-नहुएँ
अजगुत छल ओ दृश्य
रेलमपेल मचल अछि दुक्खक
अजगुत ईहो दृश्य

बेर-बेर नितराएल छलहुँ जै विजय-माल पर
मण्डित कहियो भेल?
मूक मन! आस तोड़ि के गेल?

हमही नहि छी देस-काल मे एसकर कौखन
बहुत-बहुत अछि लोक
ककरो शोक’छि वृथा जनम केर
ककरो मृत्युक शोक

दीप जरौने छलहुँ जे कहियो भूत-काल पर
दीपित की ओ भेल?
मूक मन! के इजोत ल’ गेल?

मनमीत के गीत

देह तँ भेटल अहँक मनमीत हमरा
मुदा, प्राणक गहन सागर कहाँ भेटल?

अपन हिय के भाव सब कें
एक क’ क’ गुथल
पुनि माला बनाओल
अन्तरात्मा मे बसल मूरत अहाँ के
सदति हम मृदु भाव सँ
तकरा सजाओल

मुदा, पूजा हमर नहिञे पूर्ण भेलै
रिक्त मन कें भरल गागर कहाँ भेटल?

अहँक ई व्यक्तित्व, हम्मर
उत्स बनलै प्रगति केर नित
आर हम बढ़िते रहल छी

मेघ-सन छल ऊँच हम्मर लक्ष्य
हम नित जोश सँ
पर्वत-शिखर चढ़िते रहल छी
छल अहँक आवेश, तें हम भिड़ल छी नित
मुदा, लक्ष्यक केन्द्र सुखकर कहाँ भेटल?

जनै छी हम, जीवनहु
संघर्षहिक एक नाम थिकिऐ
अपन सार्थकता स्वयं साधय पड़ै अछि
जा ने श्वासक धुन-धुनहु सँ
साध्य के आह्वान निकलय
तखन धरि सत्वर समर लाधय पड़ै अछि

साँच मानू मीत, से हम क' रहल छी
आत्मा कें वेग द्रुततर कहाँ भेटल?

कोशी-गीत : 2008

पहिने कहियै कोशी-सन के
नइँ बेरदरदी कोय
आब देखै छी--सगर मुलुक के
लोक कहैए रोय--
बोलो भैया रामे राम
रामे राम हौ भाय
नेता-सन बेदरदी जग मे कोय नै

ठकि-फुसिया क' मुरुख बना क'
बन्हलक कोशी-बान्ह
सब बापुत मिलि जथा अरजलक
लोकक गेलै परान
बोलो भैया रामे राम
रामे राम हौ भाय
नेता-सन बेदरदी जग मे कोय नै

लाख टका के अपरुब काया
पानि मे भासल जाय
तै काया कें देखहो भैया
कौआ-कुक्कुर खाय
बोलो भैया रामे राम
रामे राम हौ भाय
नेता-सन बेदरदी जग मे कोय नै

जै ठाँ चकमक नगर बसल छल
तै ठाँ धार अथाह
सोचि क' देखहो मंगरू भैया
के केलकहें तबाह
बोलो भैया रामे राम
रामे राम हौ भाय
नेता-सन बेदरदी जग मे कोय नै

फेर कहै छह कोशी बन्हबै
खल्ला लेबै ओदारि
कुकुर-बिलाइ के मौत मरै सँ
नीक जे धरह कोदारि
बोलो भैया रामे राम
रामे राम हौ भाय
नेता-सन बेदरदी जग मे कोय नै

तगमा घुरेबाक गीत

लेखक सब तगमा घुरबै छथि
हें-हें अहाँ हँसै छी
निरपराध माथा चुरबै छथि
हें-हें अहाँ हँसै छी
मानवता के प्राण छुटैए
हें-हें अहाँ हँसै छी
संविधान के शील लुटैए
हें-हें अहाँ हँसै छी

जीवन दूभर भेल जाइए
अहाँ हँसै छी
अजगुत निर्णय लेल जाइए
अहाँ हँसै छी
भारत-माँ के नोर चुबैए
अहाँ हँसै छी
शर्म-हया सब कूप डुबैए
अहाँ हँसै छी

स्वतंत्रता के मूल्य बचल अछि
तें हँसैत छी
थोड़े विवेकी जन के बल अछि
तें हँसैत छी
हुनकर पूरा नहि चलैत छनि
तें हँसैत छी
दालि राहरिक नहि गलैत छनि
तें हँसैत छी

काल अनागत देखि रहल अछि,
सोचि क’ हँसियौ
ऋषि-मुनि-गण के कथी कहल अछि
सोचि क’ हँसियौ
की द’ जेबै बाल-बचा कें
सोचि क’ हँसियौ
समय बजारत कोना नचा कें
सोचि क’ हँसियौ

सरकार के गीत

मिथिला कें भेटलै छदाम नहि
तैयो जय सरकार के
रौदी-दाही इन्तिजाम नहि
तैयो जय सरकार के

सद् विवेक के कोनो काज नहि
तैयो जय सरकार के
प्रजातंत्र के बचल लाज नहि
तैयो जय सरकार के

ई की कम छै अप्पन दल के
टीकल छै सरकार
ई की कम जे अदना सब के
टिरबी भेलै उनार

इहो कोना कम, अप्पन सेठक
बढ़लै खूब कमाइ
आ तै पर सँ, दुश्मन-घर मे
जमजम करय कसाइ

मानल, मनुखक मोल घटाबय
तैयो जय सरकार के
भाषण सँ घर-गाम पटाबय
तैयो जय सरकार के।

मिथिला देसक गीत

रे भाइ, जनगण अरजल जनबल धनबल
हमरा नै किछु भेल।

फैशन रामक चलल चहूँ दिस
सीता केर नहि मान
से सीता दुख ताप थकित भेलि
मिथिला शिथिला नाम

रे भाइ, अजुको राम न भलमानुस भेला
पुनि बनवासे देल।

ककरा कहबै के पतियैतै
सबटा हमरे दोख
पूब-पछिम हम किछु नहि तकलहुँ
खइलहुँ टा भरि पोख

रे भाइ, अपना-अपनी कें सब बढ़लहुँ
देस रसातल गेल।

भूमि ने रहलै, भाव ने रहलै
रहल ने मुँह के बोल
खंड खंड हम घरहि कें बाँटल
गोलहु मे दू गोल

रे भाइ, जखन कि दुनिञा हिल-मिल जुड़बय
तखनहु नहि घर मेल।

जाति-धरम के गीत

यौ भाइजी किऐ लड़ै छी जाति-धरम के नाम पर
घुरियौ अपन ठाम पर यौ

एक्के चान-सुरुज आ तारा
एक्के धरती माँक सहारा
जल मे किसिम-किसिम के मोती
लेकिन एक्के कूल-किनारा।
यौ भाइजी, एके बात लागू छै अल्ला-राम पर
घुरियौ अप्पन ठाम पर यौ

जेहने हमरा मुँह के बोली
तेहने बहिना तूँ हमजोली
दिल मे प्रीत हमर जै रँग के
तेहने तोर हृदय के होली
हे बहिनो, ताजिनगी हम रहब संगहि एहि धाम पर
घुरहक अप्पन ठाम पर हे

सबके मिलने धरती सुन्दर
सबके टुटने चालि छुछुन्दर
धारा अलग बहय तँ नदिया
सब मिलि जाय तँ बनय समुन्दर
यौ भाइजी, अतमा देखू जुनि भरमबियौ चाम पर
घुरियौ अप्पन ठाम पर यौ

•••